https://kvsangathan.nic.in/ | @KVSHQ | @KVS_HQ | @kvshqr | KVS HQ

नई दिल्ली | के.वि.सं. (मु.)

संस्करण: अप्रैल 2026
वर्ष-1, अंक- 10
4 पृष्ठ

केन्द्रीय विद्यालय क्रॉनिकल

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

** यह 'केन्द्रीय विद्यालय क्रॉनिकल' के अंग्रेज़ी संस्करण का हिंदी अनुवाद है।*

संपादकीय

'नागरिक देवो भवः' - सेवा संकल्प से बदलता शासन स्वरूप

24 फरवरी 2026 को सेवा तीर्थ में आयोजित केंद्रीय मंत्रिमंडल की पहली बैठक में सेवा संकल्प प्रस्ताव को अपनाया जाना, भारत की शासन प्रणाली में एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी परिवर्तन का संकेत है। यह कदम औपनिवेशिक सोच पर आधारित अधिकार-केंद्रित प्रशासन से आगे बढ़कर भारतीय जीवन-मूल्यों- ''सेवा परमो धर्मः'' और ''नागरिक देवो भवः''- पर आधारित एक नई कार्य-संस्कृति को स्थापित करता है।

इस प्रस्ताव का मूल उद्देश्य सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों की कार्यशैली में सकारात्मक परिवर्तन लाना है, क्योंकि यही वर्ग शासन और जनता के बीच प्रत्यक्ष सेतु का कार्य करता है। शासन को शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि नागरिकों के प्रति एक पवित्र कर्तव्य के रूप में देखा जाए, जहाँ प्रत्येक निर्णय सेवा भाव से प्रेरित हो।

सेवा संकल्प एक नागरिक-प्रथम दृष्टिकोण को सशक्त करता है, जिसमें नीति-निर्माण और सेवाओं की डिलीवरी के केंद्र में आम नागरिक को रखा गया है। इसका लक्ष्य विशेष रूप से जमीनी स्तर पर लोगों के जीवन को सरल, सहज और सुगम बनाना है।

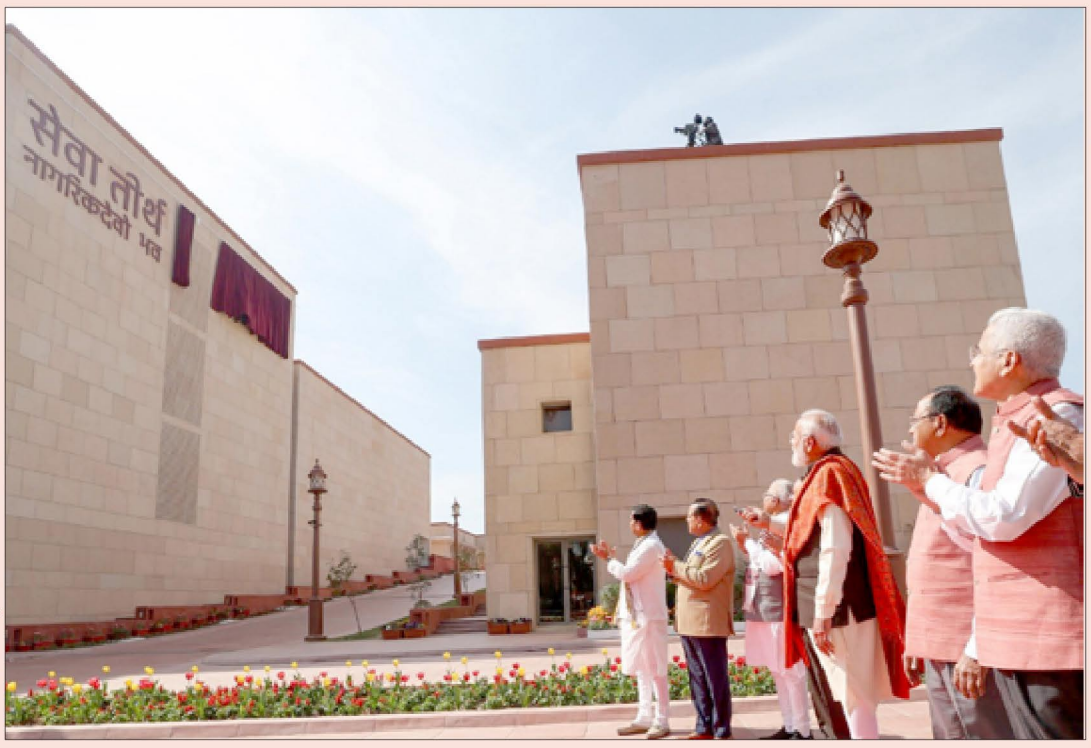

उत्तरदायी, संवेदनशील और जवाबदेह बनाने पर बल देता है।

इस पहल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है-शासन संस्कृति में परिवर्तन। अब यह व्यवस्था शक्ति-केंद्रित न होकर नागरिक-केंद्रित सेवा मॉडल की ओर अग्रसर है। ''सेवा तीर्थ'' की अवधारणा, लोक सेवा को एक पवित्र तीर्थयात्रा के रूप में स्थापित करती है, जो शासन के वास्तविक स्वरूप को परिभाषित करती है।

यह संकल्प विकसित भारत 2047 के व्यापक दृष्टिकोण के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य भारत को एक विकसित राष्ट्र और वैश्विक अर्थव्यवस्था के अग्रणी केंद्र के रूप में स्थापित करना है। इसमें दक्षता, प्रौद्योगिकी-आधारित प्रशासन, तथा ईज ऑफ लिविंग और ईज ऑफ डूइंग बिज़नेस को बढ़ावा देने पर विशेष बल दिया गया है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने भी इस प्रस्ताव को आत्मसात करने की दिशा में सार्थक पहल की है। 2 मार्च 2026 को वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक आयोजित कर इसके सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा की गई और कार्यान्वयन के लिए ठोस कदम तय किए गए। सेवा-उन्मुख दृष्टिकोण को अपनाकर, के.वि.सं. एक संवेदनशील, उत्तरदायी और नागरिक-केंद्रित शासन संस्कृति के निर्माण में निरंतर सक्रियता से आगे बढ़ रहा है।

यह प्रस्ताव संविधान में निहित मूल्यों-न्याय, समानता, गरिमा और विधि के शासन-के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता को भी दोहराता है। ये सिद्धांत शासन में पारदर्शिता, निष्पक्षता और नैतिकता सुनिश्चित करते हैं। साथ ही, यह प्रशासन को अधिक

~ विकास गुप्ता, आईएएस
■ आयुक्त, के.वि.सं..

भविष्य की शिक्षा की ओर के.वि.सं. का सशक्त कदम

चंदना मंडल
■ *अपर आयुक्त (शै.) के.वि.सं. (मु.)*

केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए अपनी शैक्षिक दृष्टि को एक नए आयाम के साथ और अधिक व्यापक, समावेशी तथा भविष्य-उन्मुख रूप में प्रस्तुत किया है। यह दृष्टि सतत विकास लक्ष्य 4 (SDG-4) की मूल भावना के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य सभी के लिए समान, गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करना तथा आजीवन सीखने के अवसरों को सुदृढ़ करना है। देशभर में फैले अपने सुदृढ़ विद्यालय नेटवर्क के माध्यम से के.वि.सं. ऐसे वातावरण के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है, जो जिज्ञासा, रचनात्मकता और उत्तरदायी नागरिग मूल्यों को पोषित करता है।

आगामी शैक्षिक सत्र में संगठन का मुख्य ध्यान विद्यार्थियों में रचनात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन क्षमताओं का विकास करने पर रहेगा। आज के तीव्र परिवर्तनशील युग में शिक्षा को केवल रटने तक सीमित रखना पर्याप्त नहीं है; बल्कि यह आवश्यक है कि शिक्षार्थियों को विश्लेषण करने, प्रश्न उठाने, नवाचार करने और सहयोगात्मक रूप से कार्य करने की क्षमता से सशक्त बनाया जाए। इसी दिशा में के.वि.सं. दक्षता आधारित शिक्षण दृष्टिकोण को और मजबूत कर रहा है, जो जिज्ञासा, समस्या-समाधान तथा अंतर्विषयक अधिगम को प्रोत्साहित करता है। कक्षाओं को अब ऐसे सृजनात्मक मंच के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहाँ विद्यार्थी सक्रिय भागीदारी के साथ विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, वास्तविक जीवन से जुड़ते हैं और गहन समझ विकसित करते हैं।

इस दृष्टिकोण को प्रभावी रूप से लागू करने हेतु के.वि.सं. शिक्षा के तीन प्रमुख आयामों-पाठ्यचर्या, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया और मूल्यांकन-पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रहा है। पाठ्यचर्या में वास्तविक जीवन के संदर्भ, स्थिरता के सिद्धांत और उच्च-स्तरीय चिंतन को समाहित किया जा रहा है। शिक्षकों को अनुभवात्मक, जिज्ञासापरक और नवाचार-आधारित शिक्षण विधियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है, जिन्हें डिजिटल संसाधनों और उभरती तकनीकों का सहयोग प्राप्त है। साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के संतुलित और विवेकपूर्ण उपयोग के माध्यम से व्यक्तिगत अधिगम को बढ़ावा देने, विद्यार्थियों की सहभागिता को सशक्त बनाने और शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

मूल्यांकन प्रणाली में भी व्यापक परिवर्तन किए जा रहे हैं, जिससे यह केवल स्मरण शक्ति का आकलन न होकर विद्यार्थियों की वास्तविक समझ और अनुप्रयोग क्षमता को परखें। सतत एवं समग्र मूल्यांकन (Formative Assessment) तथा विश्लेषणात्मक कार्यों को बढ़ावा दिया जा रहा है, ताकि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक सार्थक बन सके। इसके साथ ही, डेटा-आधारित शैक्षणिक योजना को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे मूल्यांकन के निष्कर्ष सीधे शिक्षण में सुधार का आधार बनें। जिन विद्यार्थियों को अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता है, उनके लिए व्यक्तिगत अधिगम योजनाएँ (ILPs) भी लागू की जा रही हैं।

के.वि.सं. बहुभाषिकता को अधिगम की एक सशक्त आधारशिला मानते हुए विद्यार्थियों की भाषाई विविधता को सम्मान देने और उसे शिक्षण प्रक्रिया में समाहित करने पर बल दे रहा है, जिससे समझ, सहभागिता और सांस्कृतिक समावेशन को बढ़ावा मिले। इसके साथ ही, समावेशी शिक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत करते हुए संगठन आगामी सत्र में विशेष शिक्षकों की नियुक्ति करेगा, ताकि विविध अधिगम आवश्यकताओं वाले प्रत्येक विद्यार्थी को उपयुक्त सहयोग मिल सके और शिक्षा वास्तव में सबके लिए सुलभ एवं प्रभावी बन सके।

के.वि.सं. रच रहा महिलाओं के सशक्त भविष्य की नई गाथा

प्रीति सक्सेना
■ उपायुक्त, के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

केन्द्रीय विद्यालयों के परिसर में लैंगिक समानता किसी दस्तावेज़ तक सीमित विचार नहीं, बल्कि रोज़मर्रा के अनुभवों में जीवंत रूप से दिखाई देने वाली सच्चाई है। भारतीय शिक्षा जगत में अग्रणी के.वि.सं. केवल पाठ्यक्रम आधारित ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि उन सामाजिक व संरचनात्मक अवरोधों को भी हटाने का सतत प्रयास करता है, जो अक्सर छात्राओं की उन्नति के मार्ग में बाधा बनते हैं। के.वि.सं. में छात्राओं के लिए ट्यूशन फीस में छूट जैसी पहलें, आर्थिक चुनौतियों को कम कर उनके नामांकन, निरंतर उपस्थिति और उत्कृष्ट प्रदर्शन को सुदृढ़ कर रही हैं। वहीं, एकल बालिका के लिए निर्धारित सीटों से अतिरिक्त प्रवेश की सुविधा इस समर्पण को और भी स्पष्ट करती है।

यहाँ सशक्तिकरण कोई औपचारिक शब्द नहीं, बल्कि निरंतर चलने वाली एक सशक्त प्रक्रिया है। एनसीसी, स्काउट्स एवं गाइड्स और आत्मरक्षा प्रशिक्षण जैसी गतिविधियों के माध्यम से छात्राओं में आत्मविश्वास, अनुशासन और नेतृत्व कौशल का सशक्त विकास हुआ है, जिससे वे रक्षा सेवाओं सहित विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान स्थापित कर रही हैं।

यही नहीं, के.वि.सं. में छात्राओं के सम्मान और गरिमा को भी प्राथमिकता दी जाती है। छात्राओं के शौचालयों में सेनेटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन और इन्सिनरेटर की व्यवस्था, साथ ही स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम, यह सुनिश्चित करते हैं कि स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ उनकी शिक्षा में बाधा न बनें। यह संवेदनशील दृष्टिकोण कार्यस्थल तक भी विस्तारित है, जहाँ सहायक मातृत्व नीतियाँ और प्रत्येक इकाई में आंतरिक शिकायत समिति (ICC) के माध्यम से POSH दिशानिर्देशों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस जैसे अवसरों को भी के.वि.सं. पूरे उत्साह के साथ मनाता है, जहाँ न केवल उपलब्धियों का सम्मान किया जाता है, बल्कि विद्यार्थियों में लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता भी विकसित की जाती है।

इन समेकित प्रयासों के माध्यम से के.वि.सं. एक ऐसे भविष्य की नींव रख रहा है, जहाँ आत्मविश्वासी, सक्षम और सामाजिक रूप से सजग युवतियाँ अपने संकल्प, साहस और उद्देश्यपूर्ण दृष्टि के साथ हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हों।

खजूरी खास में मुख्यमंत्री ने किया नये केन्द्रीय विद्यालय का शिलान्यास

नई दिल्ली, 2 मार्च 2026: दिल्ली की मा. मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने केन्द्रीय विद्यालय खजूरी खास के अस्थायी भवन का उद्घाटन करने के साथ-साथ उसके स्थायी भवन के निर्माण के लिए भूमि पूजन भी किया। इस विद्यालय की स्वीकृति दिसंबर 2024 में प्रदान की गई थी। उद्घाटन के अवसर पर श्रीमती रेखा गुप्ता ने कहा कि खजूरी खास में केन्द्रीय विद्यालय के निर्माण से करावल नगर तथा पूरे उत्तर-पूर्वी दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण सुधार होगा। केन्द्रीय विद्यालय के निर्माण से क्षेत्र के बच्चों को बेहतर और आधुनिक शिक्षा प्राप्त होगी। इस दौरान उनके साथ दिल्ली सरकार के शिक्षा मंत्री श्री आशीष सूद, कानून एवं श्रम मंत्री श्री कपिल मिश्रा, उत्तर-पूर्व लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री मनोज तिवारी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में के.वि.सं. आयुक्त श्री विकास गुप्ता, अपर आयुक्त (प्रशा.) श्री दीपेश गहलोत सहित कई अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भी सहभागिता की।

शिक्षा में एआई का बढ़ता कदम

एआई से सशक्त शिक्षा की ओर: भारत बोधन कॉन्क्लेव की प्रेरक पहल

अर्चना जायसवाल
सहायक आयुक्त, के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

12 और 13 फरवरी को नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित भारत बोधन एआई कॉन्क्लेव 2026 ने भारतीय स्कूली शिक्षा के परिदृश्य में एक नए युग की शुरुआत का संकेत दिया। यह आयोजन केवल विचार-विमर्श तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने प्रायोगिक प्रयासों से आगे बढ़कर एक सुदृढ़ और व्यापक राष्ट्रीय रणनीति की दिशा स्पष्ट की। शिक्षा मंत्रालय और आईआईटी मद्रास के संयुक्त तत्वावधान में 'Bharat EduAI Stack' का शुभारंभ इस दिशा में एक ऐतिहासिक कदम साबित हुआ। यह स्वदेशी, ओपन-सोर्स डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर शिक्षा के क्षेत्र में वही भूमिका निभाने की क्षमता रखता है, जो डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में यूपीआई ने निभाई है।

इस स्टैक की मूल भावना 'ह्यूमन-फर्स्ट' दृष्टिकोण पर आधारित है, जहाँ तकनीक को शिक्षक का सहयोगी माना गया है, प्रतिस्थापन नहीं। साथ ही 'Ethical Safeguards' यह सुनिश्चित करते हैं कि विद्यार्थियों का डेटा सुरक्षित रहे और एआई के उपयोग में निष्पक्षता बनी रहे। भविष्य की दिशा 'S.A.F.E. AI'—Secure, Accountable, Fair and Empowering—के सिद्धांतों पर केंद्रित है, जिसमें एआई साक्षरता और आलोचनात्मक चिंतन को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने पर बल दिया गया है।

कॉन्क्लेव में विचारों को वास्तविक रूप में देखने का अवसर भी मिला, जहाँ विभिन्न एआई स्टार्टअप्स ने तकनीकी सत्रों और प्रदर्शनों के माध्यम से यह दिखाया कि कैसे एआई अब कक्षाओं तक सहजता से पहुँच रहा है। पारंपरिक 'एक ही ढर्रे' वाली शिक्षा पद्धति की जगह अब ऐसे स्मार्ट समाधान विकसित हो रहे हैं, जो विद्यार्थियों की सीखने की गति और स्तर के अनुरूप सामग्री को स्वतः समायोजित करते हैं।

व्यक्तिगत अधिगम और आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता (FLN) को सुदृढ़ करने वाले एआई उपकरण शिक्षकों के लिए एक प्रभावी सहायक बनकर उभरे हैं, जो योजना निर्माण और मूल्यांकन जैसे कार्यों को सरल बनाते हैं। वहीं, उपस्थिति प्रबंधन और 'घोस्ट स्टूडेंट्स' की पहचान में एआई और डेटा विश्लेषण के उपयोग ने पारदर्शिता और जवाबदेही को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

विशेष रूप से बहुभाषी एआई समाधानों पर दिया गया बल उल्लेखनीय है, जो विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में सीखने और समझने का अवसर प्रदान कर, ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों के छात्रों के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोलता है।

के.वि.सं. मुख्यालय और विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों से आए प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी, 150 से अधिक एआई स्टार्टअप्स और लगभग 200 प्रदर्शनी स्टॉल्स की उपस्थिति ने इस आयोजन को विचारों के समृद्ध संगम में परिवर्तित कर दिया। यह मंच न केवल अनुभव साझा करने का अवसर बना, बल्कि के.वि.सं. में एआई आधारित शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु एक ठोस मार्गदर्शन भी प्रदान कर गया।

भारत बोधन एआई कॉन्क्लेव से प्राप्त नवाचारी दृष्टिकोण अब केन्द्रीय विद्यालय संगठन को एक ऐसे भविष्य की ओर अग्रसर कर रहे हैं, जहाँ बुद्धिमान अधिगम प्रणालियाँ शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी और गतिशील बनाएंगी और विद्यार्थियों को नई सदी की चुनौतियों के लिए सशक्त रूप से तैयार करेंगी।

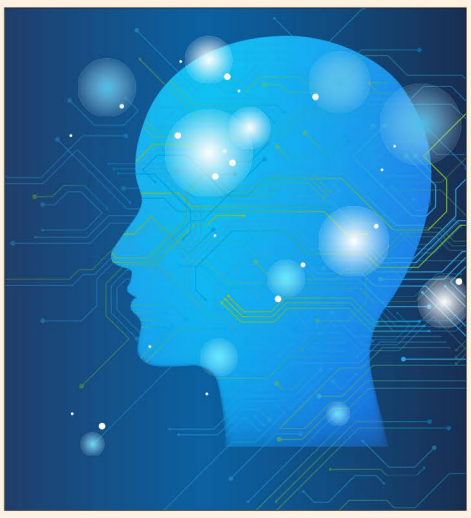

डिजिटल युग में सतर्कता
बच्चों की सुरक्षा का मंत्र

नरेश कुमार
सहायक आयुक्त, के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी

कोविड काल के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा परिवर्तन बच्चों द्वारा डिजिटल उपकरणों के तीव्र उपयोग के रूप में सामने आया। महामारी के बाद भी यह निर्भरता कम होने के बजाय और अधिक बढ़ी है, क्योंकि अब सीखने के संसाधन और सामग्री सहज रूप से उपलब्ध हैं। यद्यपि डिजिटल उपकरण आज शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं, लेकिन इनके साथ जुड़े साइबर सुरक्षा के खतरे भी उतने ही गंभीर हैं।

आठ वर्ष के बच्चे से लेकर अठारह वर्ष के किशोर तक—सभी साइबर अपराधियों के लिए आसान लक्ष्य बन सकते हैं। अधिकतर मामलों में उपकरणों को सीधे हैक नहीं किया जाता, बल्कि बच्चों को साधारण और सामान्य तरीकों से निशाना बनाया जाता है।

• **गेमिंग और रिवार्ड आधारित ऐप्स:** कई ऐप्स गेम या रिवार्ड पॉइंट्स का लालच देकर व्यक्तिगत जानकारी मांगते हैं। ये ऐप्स संपर्क सूची, संदेश, कैमरा या कॉल्स तक पहुँच की अनुमति लेते हैं, जिससे डेटा का दुरुपयोग और आर्थिक धोखाधड़ी की आशंका बढ़ जाती है।

• **एआई आधारित फोटो और वीडियो टूल्स:** किशोर वर्ग वेब-आधारित एआई टूल्स की ओर आकर्षित होता है। इन प्लेटफॉर्म्स पर फोटो या वीडियो साझा करना डीपफेक, आपके नाम का दुरुपयोग और अन्य डिजिटल जोखिमों को जन्म दे सकता है।

सतर्कता ही सुरक्षा
बच्चों को सुरक्षित रखने का सबसे प्रभावी उपाय है—निरंतर और संतुलित निगरानी, चाहे वह घर में हो या विद्यालय में।

• **भौतिक निगरानी:** अभिभावक और शिक्षक इस बात का ध्यान रखें कि बच्चे डिजिटल उपकरणों का उपयोग किस प्रकार और कितनी देर तक कर रहे हैं।

• **डिजिटल निगरानी:** अभिभावक नियंत्रण ऐप्स जैसे Google Family Link, Norton Family और Kaspersky Safe Kids के माध्यम से सामग्री, स्क्रीन समय और गोपनीयता सेटिंग्स को नियंत्रित कर सकते हैं।

आगे की राह
साइबर सुरक्षा को अब वैकल्पिक नहीं, बल्कि अनिवार्य शैक्षिक घटक के रूप में स्वीकार करना होगा। इसे पाठ्यक्रम और अभिभावक-शिक्षक बैठकों का अभिन्न हिस्सा बनाया जाना चाहिए। विद्यालयों को केवल जागरूकता तक सीमित न रहकर **'साइबर सुरक्षा ड्रिल'** जैसी व्यावहारिक गतिविधियाँ भी आयोजित करनी चाहिए, ताकि विद्यार्थी संभावित खतरों को पहचानने और उनसे निपटने के लिए तैयार हो सकें।

सक्सेस स्टोरी

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा - सफलता की कहानियां

सपनों को मिला मुकाम: उत्कृष्टता से गढ़ी सफलता की प्रेरक उड़ान

वैभवी अग्रवाल
पूर्व विद्यार्थी, केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, रायपुर

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2025 में ऑल इंडिया रैंक 35 प्राप्त करना मेरे लिए केवल एक उपलब्धि नहीं, बल्कि वर्षों से निर्मित उस मजबूत नींव का परिणाम है, जिसकी शुरुआत बहुत पहले हो चुकी थी। कक्षा 2 से 10 तक के नौ महत्वपूर्ण वर्षों में केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, रायपुर मेरे लिए केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि वह आधारभूमि रहा जिसने मेरे दृष्टिकोण और व्यक्तित्व को आकार दिया।

केन्द्रीय विद्यालय में मुझे अनुशासन, दृढ़ता और बड़े सपने देखने का साहस मिला। केन्द्रीय विद्यालय एक 'महान समताकारी मंच' है, जहाँ विविधता के बीच पले-बढ़े अनुभव ने मुझे टीम भावना, सहानुभूति और पारस्परिक सम्मान जैसे जीवनोपयोगी गुण सिखाए—जो एक सिविल सेवक के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों की समृद्ध परंपरा ने मेरे भीतर रचनात्मकता और जीवन के प्रति व्यापक दृष्टिकोण का विकास किया।

मैं अपने शिक्षकों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके अटूट विश्वास और मार्गदर्शन ने मेरी सफलता की दिशा निर्धारित की। यूपीएससी जैसी कठिन परीक्षा की तैयारी के दौरान जो निरंतरता और उद्देश्यबोध बना रहा, उसकी जड़ें उन्हीं प्रारंभिक वर्षों में निहित हैं।

आज, जब मैं देश की सेवा के लिए अग्रसर हूँ, तो अपने साथ के.वि. की वही सीख, वही संस्कार और वही आत्मविश्वास लेकर चल रही हूँ। यह संस्था केवल शिक्षा ही नहीं देती, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए तैयार भी करती है।

खेल के मैदान से प्रशासनिक सेवा तक: के.वि. का मार्गदर्शन बना सफलता का आयाम

दीक्षा राय
पूर्व विद्यार्थी, केन्द्रीय विद्यालय अंडाल

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2025 में ऑल इंडिया रैंक 40 प्राप्त करना, और इससे पहले वर्ष 2022 में ऑल इंडिया रैंक 374 हासिल करना, उस दृढ़ संकल्प और साहस का परिणाम है, जिसकी पहली ज्योति केन्द्रीय विद्यालय अंडाल में ही प्रज्वलित हुई थी। वर्तमान में DANICS अधिकारी (प्रोबेशनर) के रूप में कार्य करते हुए जब मैं अपने अतीत की ओर देखती हूँ, तो पाती हूँ कि मेरे करियर की यह उड़ान उन्हीं प्रारंभिक वर्षों की मजबूत नींव पर आधारित है।

के.वि. अंडाल मेरे लिए केवल एक विद्यालय नहीं था, बल्कि जीवन का वास्तविक प्रशिक्षण केंद्र था। वर्ष 2011 और 2012 में ताइक्वांडो में के.वि. सं. राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अपने विद्यालय का प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए केवल खेल तक सीमित अनुभव नहीं था; वहीं मैंने वह अनुशासन, धैर्य और प्रतिस्पर्धात्मक भावना सीखी, जिसने मुझे यूपीएससी जैसी चुनौतीपूर्ण परीक्षा में सफलता दिलाने की शक्ति दी।

के.वि.सं. ने मुझे एक संतुलित और समग्र वातावरण प्रदान किया, जहाँ शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों ने मेरे आत्मविश्वास को नई ऊँचाइयाँ दीं। इसी वातावरण ने मुझे उन सपनों को देखने और उन्हें साकार करने का साहस दिया, जो कभी असंभव से प्रतीत होते थे।

खेल के मैदान से सिविल सेवा तक की इस यात्रा को संभव बनाने में मेरे शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिनके अटूट विश्वास और मार्गदर्शन ने मेरे प्रयासों को उद्देश्य में परिवर्तित किया।

आज, जब मैं अपने व्यावसायिक जीवन की नई शुरुआत कर रही हूँ, तो के.वि. अंडाल से प्राप्त संस्कार और सीख मेरे सबसे बड़े संबल हैं। यह अनुभव इस सत्य को सिद्ध करता है कि केन्द्रीय विद्यालय की कक्षा में रखी गई मजबूत नींव वास्तव में राष्ट्र के नेतृत्व के लिए सक्षम व्यक्तित्व का निर्माण कर सकती है।

के.वि. की पाठशाला से राष्ट्रसेवा का मिला मंत्र

विश्वजीत गुप्ता
पूर्व विद्यार्थी, पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, ग्वालियर

मैं विश्वजीत गुप्ता हूँ। हाल के दिनों में मेरी पहचान एक रैंक से जुड़ गई है, लेकिन उस संख्या के पीछे एक गहरी यात्रा छिपी है—एक बेहतर इंसान बनने की यात्रा, जिसे केन्द्रीय विद्यालय ने विशेष रूप से आकार दिया।

मेरी स्कूली शिक्षा की शुरुआत वर्ष 2008 में कक्षा 3 से केन्द्रीय विद्यालय दतिया में हुई, जो उस समय नया-नया स्थापित हुआ था। एक नवस्थापित विद्यालय का हिस्सा बनना मेरे भीतर राष्ट्रसेवा की भावना का बीज बो गया। वहाँ का स्नेहपूर्ण और घनिष्ठ वातावरण मुझे प्रारंभिक जिम्मेदारियों से परिचित कराता रहा, जबकि मित्रता और सहपाठी अधिगम ने टीम भावना और सामूहिक उत्तरदायित्व की समझ विकसित की।

इसके बाद मैंने अपनी माध्यमिक शिक्षा विज्ञान संकाय से पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1, शक्तिनगर, ग्वालियर से पूर्ण की। इन वर्षों ने मेरे नेतृत्व कौशल, सहयोग की भावना और निर्णय लेने की क्षमता को नई धार दी।

सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी, विज्ञान कांग्रेस, खेल प्रतियोगिताएँ तथा भारत स्काउट्स एवं गाइड्स जैसी गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता ने मेरे दृष्टिकोण को व्यापक बनाया और समाज के प्रति सार्थक योगदान देने के मेरे संकल्प को और मजबूत किया।

विद्यालय जीवन में बने संबंधों ने मेरी शैक्षणिक और व्यावसायिक दिशा को मार्गदर्शित किया। यह यात्रा केवल मेरी नहीं है—मैं अपने शिक्षकों, मार्गदर्शकों और मित्रों का हृदय से आभारी हूँ, जिनके सहयोग और मार्गदर्शन ने मुझे संवारते हुए हमेशा जमीन से जुड़े रहने की प्रेरणा दी।

केन्द्रीय विद्यालय में मुझे एक ऐसा परिवार मिला, जो मेरे घर से परे होते हुए भी उतना ही अपना था और जिसने मुझे जीवन की हर राह पर आगे बढ़ने का आत्मविश्वास दिया।

स्पेशल स्टोरी

पीएम श्री के.वि. रामगढ़ कैंट

'सिटिजन साइंटिस्ट' बनकर खोजा विद्यालय परिसर में चिड़ियों का जीवंत संसार

डॉ. विनीता परमार
■ *टीजीटी (विज्ञान), पीएम श्री के.वि. रामगढ़ (के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय रांची)*

शहर की भागदौड़ और शोर-गुल के बीच, जहाँ अक्सर प्रकृति की मधुर फुसफुसाहटें दब जाती हैं, वहीं एक विद्यालय परिसर में कुछ युवा खोजकर्ताओं ने यह अद्भुत खोज की कि उनका स्कूल केवल ईंट-पत्थरों का ढांचा नहीं, बल्कि जीवन से भरपूर एक सजीव आश्रय स्थल है।

यह कहानी है पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय रामगढ़ छावनी के कक्षा IX के विद्यार्थियों की, जिन्होंने एक सप्ताह के लिए अपनी पुस्तकों से थोड़ा हटकर दूरबीन थाम ली और सिटिजन साइंटिस्ट बन प्रकृति के रहस्यों को समझने निकल पड़े।

प्रकृति की पुकार
यह सब एक छोटी सी जिज्ञासा से शुरू हुआ- "यहाँ हमारे अलावा और कौन रहता है?" जहाँ शहरी जीवन अक्सर कंक्रीट के जंगल जैसा प्रतीत होता है, वहीं हमारे विद्यालय के हरित परिसर में अनगिनत जीवों का संसार छिपा हुआ था। इसी रहस्य को उजागर करने के उद्देश्य से कैंपस बर्ड काउंट प्रोजेक्ट की शुरुआत हुई, जिसने कक्षा की पढ़ाई को प्रकृति की धड़कनों से जोड़ने का कार्य किया।

eBird (इंडिया) प्लेटफॉर्म के माध्यम से विद्यार्थी केवल पक्षियों को देख ही नहीं रहे थे, बल्कि वैश्विक वैज्ञानिक डाटाबेस में अपना योगदान भी दे रहे थे।

भोर की गश्त- आसमान पर निगाहें
13 और 16 फरवरी की सुबह, ठीक 8:20 पर ठंडी और ताज़गी भरी हवा के बीच विद्यार्थियों के दो समूह अपने मिशन पर निकल पड़े। हाथों में फील्ड चेकलिस्ट और मोबाइल डिवाइस थे, और सामने थी एक चुनौती- शांत रहना, धैर्य रखना और सटीक अवलोकन करना।

- **पहली झलक (13 फरवरी):**
परिसर जीवंत हो उठा। सिर्फ एक घंटे में विद्यार्थियों ने लगभग 20 प्रजातियों के पक्षियों की पहचान की और 100 से अधिक पक्षियों की गणना की।
- **दूसरी सुबह (16 फरवरी):**
हर सुबह कुछ नया लेकर आती है। इस दिन 17 प्रजातियों के पक्षियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

इस रोमांचक यात्रा के अंत तक, विद्यार्थियों ने अपने ही परिसर में पक्षियों की 26 अद्वितीय प्रजातियों का दस्तावेजीकरण कर एक अद्भुत उपलब्धि हासिल की, यह सिद्ध करते हुए कि प्रकृति कहीं दूर नहीं, बल्कि हमारे आसपास ही साँस ले रही है।

पक्षियों की प्रमुख अवलोकित प्रजातियाँ

अवलोकन के प्रमुख मानदंड	13 फरवरी 2026		16 फरवरी 2026	
पक्षियों की अवलोकित प्रजातियां	20		14 (+1 taxa)	
व्यक्तिगत गणना	158		110	
प्रजातियाँ	कठफोड़वा	1	पपीहा	2
	हरियल	2	भारतीय धूसर धनेश	2
	महोख	2	कॉमन टेलर बर्ड	2
	भारतीय कोयल	2	कलचुरी	2
	अंधबक	2	मैगपाई रॉबिन	2
	पीलक	2	चित्तीदार फाख्ता	3
	कोतवाल पक्षी	2	लाल-कंठ बुलबुल	3
	कॉमन टेलर बर्ड	2	हरियल फुदकी	3
	कलचुरी	2	कबूतर	5
	मोर	3	कठफोड़वा	5
	चित्तीदार फाख्ता	3	पीलक	5
	काली चील	3	शकरखोरा	5
	भारतीय धूसर धनेश	3	तोता	6
	किंगफिशर	3	मैना	15
	मैना	4	जंगल बैब्लर	50
	शकरखोरा	4		
	तोता	6		
	कौवा	12		
	कबूतर	50		
	छोटा पनकौवा	50		
अधिकतम प्रजातियाँ	कबूतर और छोटा पनकौवा	50	जंगल बैब्लर	50

सूची देखने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें।

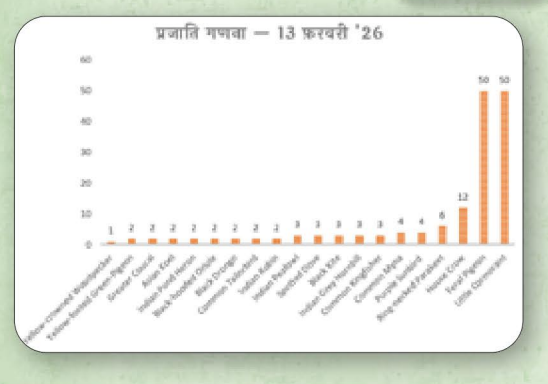

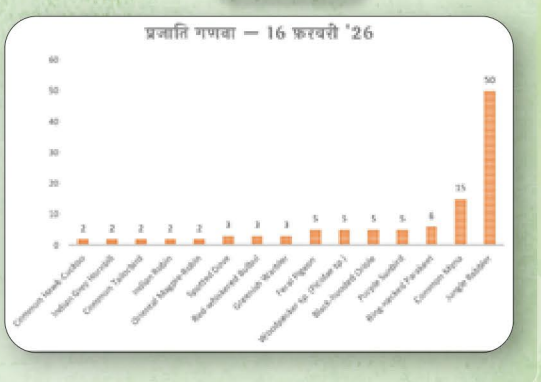

चहचहाहट से बढ़कर- एक संतुलित संसार

जैसे ही आंकड़ों को अपलोड और सत्यापित किया गया, एक बड़ा चित्र उभरकर सामने आया। छात्रों ने केवल "पक्षियों" को नहीं देखा, बल्कि एक सुव्यवस्थित समाज को समझा।

- अपमार्जक (Scavengers) परिसर को स्वच्छ रखते हैं।
- कीटभक्षी (Insectivores) प्राकृतिक कीट नियंत्रण का कार्य करते हैं।
- शाकाहारी (Herbivores) भविष्य के वृक्षों के लिए बीजों का प्रसार करते हैं।

जीवन की विविधता ने यह सिद्ध किया कि हमारा परिसर एक संतुलित शहरी पारिस्थितिकी तंत्र है — रामगढ़ कैंट के लिए एक छोटा, किन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण हरित ऑक्सीजन केंद्र।

छात्र से वैज्ञानिक बनने तक
परिवर्तन स्पष्ट दिखाई दे रहा था। दूरबीन के लेंस के माध्यम से "पर्यावरण विज्ञान" अब केवल किताब का एक अध्याय नहीं रहा, बल्कि एक जीवंत अनुभव बन गया।

इस परियोजना ने विकसित किया—

- **डिजिटल साक्षरता:** वास्तविक दस्तावेज़ीकरण के लिए eBird ऐप का कुशल उपयोग।
- **विश्लेषणात्मक सोच:** यह समझना कि पारिस्थितिक भूमिकाएँ हमारे संसार को कैसे संतुलित रखती हैं।
- **रचनात्मक अभिव्यक्ति:** विद्यालय की दीवार पत्रिका के माध्यम से अपने निष्कर्षों को जीवंत रूप देना।

एक छात्र ने कहा,
"यह सिर्फ एक गतिविधि नहीं थी; ऐसा लगा मानो हमने पहली बार अपने विद्यालय को सच में देखा हो।"
यह "जीवंत प्रयोगशाला" उन्हें वह सिखा गई, जो कोई भी व्याख्यान नहीं सिखा सकता—कि हम एक नाज़ुक और सुंदर दुनिया के साथ अपना स्थान साझा करते हैं, जिसकी रक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है।

आगे की राह
कैंपस बर्ड काउंट परियोजना में 26 पक्षी प्रजातियों का अभिलेखन कर विद्यार्थियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि हम अपने हरित क्षेत्रों की रक्षा करें, तो प्रकृति हमारे साथ रहेगी और हमारे लिए गुनगुनाती रहेगी।

पीएम श्री के.वि. रामगढ़ कैंट में हम केवल विद्यार्थियों का निर्माण नहीं कर रहे, बल्कि ऐसे पर्यावरण-सजग नागरिक तैयार कर रहे हैं, जो यह समझते हैं कि पृथ्वी को बचाने की शुरुआत अपने ही आसपास से होती है।

समय के उस पार: के.वि. की यादों ने फिर से है पुकारा

केन्द्रीय विद्यालय पट्टम में आयोजित हुआ एक अनोखा पूर्व विद्यार्थी मिलन

प्रकाशन अनुभाग
के.वि.सं. (मुख्यालय)

कभी-कभी समय भागता नहीं, ठहर जाता है। चुपचाप, बिना शोर किए, वह हमें वापस वहीं ले आता है-जहाँ से हमारी कहानी ने पहली सीढ़ी चढ़ी थी। केन्द्रीय विद्यालय पट्टम के 1976 बैच के पूर्व विद्यार्थियों का यह मिलन ऐसा ही एक क्षण था-मानो समय ने पलटकर उन्हें फिर से अपने बचपन से मिला दिया हो।

नीले-सफेद परिधान, सलीके से डाले गए दुपट्टे, लाल रिब्बन से बंधी चोटियाँ और साथ में सफेद मोज़े व चमकते काले जूते पहने छात्र-यह कोई साधारण दृश्य नहीं था, यह उन दिनों की धड़कन थी, जो वर्षों बाद फिर से जीवित हो उठी थी।

चेहरों पर वही मासूम मुस्कान, आँखों में वही चमक और दिलों में अनकही हलचल लिए, वे लौटे अपने उस आँगन में-केन्द्रीय विद्यालय पट्टम, तिरुवनंतपुरम-जहाँ से उनके सपनों ने पहली उड़ान भरी थी। लगभग तीस साथियों का यह संगम केवल एक पुनर्मिलन नहीं था; यह बचपन की उन गलियों में लौटने जैसा था, जहाँ हर कोना एक कहानी कहता है।

फिर से सजी प्रार्थना सभा... वही प्रार्थनाएँ, वही शपथ, वही एक सुर में उठती आवाज़ें... बिना किसी अभ्यास के, सब कुछ वैसा ही जैसे कल की बात हो। मानो शब्द नहीं, स्मृतियाँ बोल रही हों-जो पचास वर्षों से दिल के किसी कोने में सहेजकर रखी गई थीं।

यूनिफॉर्म फिर से पहनी गई, बैज गर्व से लगाए गए। कुछ पलों के लिए उम्र जैसे थम गई और सालों का फासला बस एक मुस्कान में सिमट गया। किसी के हाथ में पुराना स्टील का टिफिन था, तो कहीं सहेजी हुई रिकॉर्ड बुक-ये सिर्फ वस्तुएँ नहीं थीं, बल्कि उन अनमोल पलों के जीवित प्रमाण थे, जो कभी कक्षाओं और खेल के मैदानों में जिए गए थे।

बातों का सिलसिला चला... हँसी गूँजी... और यादें फिर से सांस लेने लगीं। तभी एहसास हुआ-समय चाहे जितना आगे बढ़ जाए, केन्द्रीय विद्यालय की आत्मा कभी पीछे नहीं छूटती। वह हर केवियन के दिल में हमेशा जीवित रहती है-एक अहसास बनकर, एक अपनापन बनकर, एक ऐसा रिश्ता बनकर... जो जीवनभर साथ चलता है।

वही प्रार्थनाएँ, वही प्रतिज्ञा और वही लय - बचपन से लेकर आज तक याद हैं।

चलो एक बार फिर से मॉर्निंग असेंबली कर लें।

Once a Always a KVian

INSPIRE–MANAK अवॉर्ड: 898 विद्यार्थी हुए सम्मानित

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के विद्यार्थियों ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए *'INSPIRE–MANAK अवॉर्ड 2025–26'* में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। इस वर्ष कुल 898 के.वि. विद्यार्थियों का चयन इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए हुआ है, जो नवाचार और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि है। इस उपलब्धि के माध्यम से केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सही मार्गदर्शन और अनुकूल वातावरण मिलने पर उनकी कल्पनाशक्ति और वैज्ञानिक दृष्टिकोण नई ऊँचाइयों को छू सकता है।

स्मार्ट सोच, स्मार्ट भविष्य
के.वि. एमईजी एंड सेंटर में IoT कार्यशाला

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय एमईजी एंड सेंटर, बेंगलुरु में इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) पर एक सशक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 80 विद्यार्थियों और 40 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह कार्यशाला उभरती तकनीकों पर आधारित एक व्यावहारिक (हैंड्स-ऑन) शिक्षण अनुभव प्रदान करने पर केंद्रित थी। डेल टेक्नोलॉजीज़ के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को स्मार्ट होम, स्वास्थ्य सेवाओं और शहरी प्रणालियों जैसे क्षेत्रों में IoT के व्यावहारिक उपयोगों से परिचित कराया गया।

इंटरैक्टिव सत्रों के दौरान छात्रों ने सेंसर, सर्किट और रास्पबेरी पाई जैसे प्लेटफॉर्म के साथ काम करते हुए वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान तैयार किए। इस प्रक्रिया में उन्होंने अपनी रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। कार्यशाला के दौरान उद्योग विशेषज्ञ स्वयंसेवकों ने छात्रों का मार्गदर्शन किया और जटिल अवधारणाओं को सरल, व्यावहारिक तरीकों से समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

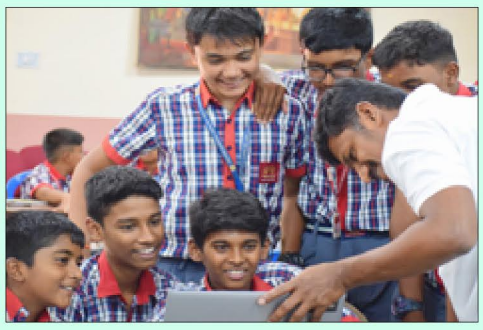

यह पहल उद्योग और शिक्षा के बीच बढ़ते सहयोग की भूमिका को रेखांकित करती है, जो स्कूली छात्रों में डिजिटल कौशल और नवाचार को सशक्त बनाने में सहायक है। साथ ही, इसने अनुभवात्मक शिक्षण और तकनीकी अन्वेषण के लिए एक प्रेरक वातावरण तैयार किया।

इस कार्यक्रम ने प्रतिभागियों में टीमवर्क, आलोचनात्मक सोच और आत्मविश्वास को भी प्रोत्साहित किया, जो विद्यालयी शिक्षा में कौशल-आधारित और अनुप्रयोग-केंद्रित सीखने की ओर हो रहे परिवर्तन को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

संस्कृत प्रवाह

यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रिया।
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता॥

अर्थ:

जैसा मन होता है वैसी ही वाणी होती है, जैसी वाणी होती है वैसे ही कार्य होता है। सज्जनों के मन, वाणी और कार्य में एकरूपता (समानता) होती है।

विचारणीय विचार

मैं किसी समुदाय की प्रगति को इस बात से मापता हूँ कि उस समुदाय की महिलाओं ने कितनी प्रगति की है।

~डॉ. भीमराव अंबेडकर

उपलब्धियाँ

दोहरे रजत के साथ नैतिक की विशेष उपलब्धि

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय हिनू के छात्र नैतिक दर्श ने अपने उत्कृष्ट कौशल का प्रदर्शन करते हुए 12वीं राष्ट्रीय ऑटिज्म एथलेटिक्स चौम्पियनशिप में दो रजत पदक जीतकर के.वि.सं. को गौरवान्वित किया। अपनी कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास के बल पर नैतिक ने प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए यह उल्लेखनीय सफलता अर्जित की। नैतिक को खूब बधाई और उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

बैडमिंटन में इमोन ने रचा कीर्तिमान

केन्द्रीय विद्यालय अम्बासा के प्रतिभाशाली छात्र इमोन देबबर्मा ने त्रिपुरा बैडमिंटन स्टेट मीट (2025-26) में शानदार प्रदर्शन करते हुए के.वि.सं. का नाम रोशन किया। इमोन ने अपनी उत्कृष्ट खेल प्रतिभा और दृढ़ खेल भावना के बल पर युवा एवं खेल निदेशालय, त्रिपुरा द्वारा ₹50,000 की प्रोत्साहन राशि प्राप्त की। इमोन को यह प्रोत्साहन राशि त्रिपुरा के मा. खेल मंत्री श्री टिंकु रॉय ने प्रदान की।

संरक्षक: विकास गुप्ता, *आईएएस*, आयुक्त, के.वि.सं.
प्रधान संपादक: चंदना मंडल, अपर आयुक्त (शै.)

संपादक मंडल: सोमित श्रीवास्तव संयुक्त आयुक्त (शै.)
रत्ना पाठक, सहायक शिक्षा अधिकारी
सचिन राठौर, सहायक संपादक

सहभागी: समस्त केन्द्रीय विद्यालय

संपादकीय सलाहकार
सुरभि गोयल, कंटेंट राइटर
अमन, कंटेंट राइटर
संजना जांगड़ा, ग्राफिक डिजाइनर

सभी संभाग अपनी टिप्पणी और विशेष स्टोरी निम्न मेल आईडी पर भेज सकते हैं:
kvschronicle@gmail.com

© केन्द्रीय विद्यालय संगठन
यह ई-प्रकाशन केवल आंतरिक वितरण हेतु
के.वि.सं. (मु.) द्वारा प्रकाशित।